श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान

माण्डला

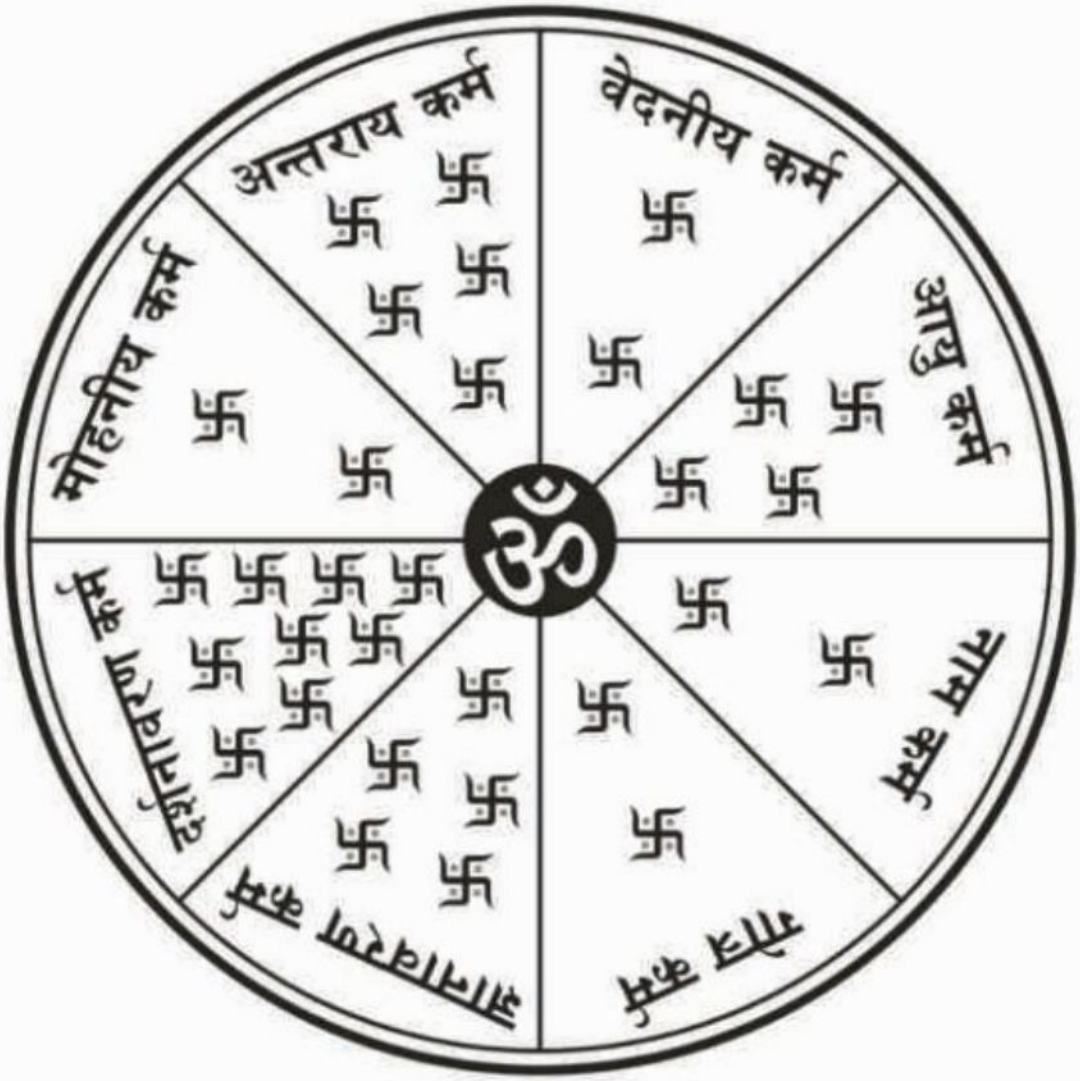

रचयिता : प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

सिद्धों का गुण (स्तवन)

दोहा- सिद्ध शिला के शीश पर, सिद्ध अनन्तानंत।
चउ गति घूमे हम सदा, होवे भव का अंत।।

(तांटक छन्द)

सिद्ध शिला पर सिद्ध लोक में, सिद्ध विराजे अपरम्पार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, नित्य निरंजन मंगलकार।।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, अष्ट कर्म का करें विनाश।
सर्व द्रव्य पर्याय प्रकाशी, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।1।।
किन्चित् न्यून पूर्व तन से जो, पाने वाले सिद्ध स्वरूप।
जिनके चरणों वन्दन करते, सुरनर मुनि जग के सब भूप।।
ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, मोहनीय आयू को नाश।
नाम गोत्र अन्तराय कर्म का, कर देते हैं पूर्व विनाश।।2।।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख बल व, अवगाहन गुण अत्याबाध।
गुण सूक्ष्मत्व अगुरुलघु एवं, होते हैं त्रिभुवन के नाथ।।
नाम स्थापना द्रव्य भाव से, कहे गये है सिद्ध प्रबुद्ध।
क्षेत्र काल गति लिंग तीर्थ व, चारित प्रत्येक बोधित बुद्ध।।3।।
ज्ञानावगाहन अन्तर संख्या, अल्पबहुत्व भेद संयुक्त।
भूत प्रज्ञापन नय से होते, सिद्ध प्रभु जी कर्म प्रमुक्त।।
आत्म ध्यान करके जिस भू से, प्राप्त किए हैं शिव सोपान।
पूज्य कहे हैं तीन लोक में, पावन परम क्षेत्र निर्वाण।।4।।
'विशद' शक्तियाँ शाश्वत जीवों, में होती हैं विस्मयकार।
प्रगटाते है परम सिद्ध जिन, जिन पद वन्दन बारम्बार।।
महिमा जिनकी अगम अगोचर, गुणानन्त के हैं जो कोष।
विशद भावना भाते हैं हम, जीवन मेरा हो निर्दोष।।5।।

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन

(लघु कर्म दहन विधान पूजा)

स्थापना

वर्ग सहित दल कमल वसु, सन्धी तत्त्वों वान।
स्थापित ह्रीं कार कर, ब्रह्म स्वर वेष्टित मान।।
अन्त पत्र की सन्धि में, ॐकार का स्थान।
ह्रीं कार युत मंत्र सब, सर्व सिद्धि मय जान।।
बड़भागी वे लोक में, ध्यावें जो कर ध्यान।
काल रूप गजराज को, हैं जो सिंह समान।।

ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।
निर्मलता उपमातीत अहः, पाने की बारी आई है।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु (ज्ञानावरणीय कर्म) विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाऐंगे।
हम भाव बनाए निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाऐंगे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसारताप (दर्शनावरणीय कर्म)
विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह चरण चढ़ाने हम आए।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये (मोहनीय कर्म)
विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
वे काम रोग का नाश करें, जो पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो कामबाण (अन्तराय कर्म)
विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है इस तन का वेतन।।

जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग (वेदनीय कर्म)
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।
हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार (नाम कर्म)
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।
ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म (गोत्र कर्म)
विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।
जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर हैं जाते।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये (आयु कर्म)
विनाशनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको विसराते हैं।
पाते अनर्घ्य पद वे प्राणी, जो जिनपद अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये (अष्ट कर्म)
विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (छन्द छप्पय)

जल से त्रय रुज नशें, त्रास भव मैटे चन्दन।
अक्षत अक्षयवान्, पुष्प से काम निकन्दन।।
क्षुधा रोग नैवेद्य, दीप मोहान्ध नशावे।
धूप जलाए कर्म, मोक्ष फल फल से पावे।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर जिन का अर्चन।
किए भाव से विशद, प्राप्त हो सम्यक् दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, शांती पाने नाथ!।
मुक्ती पथ में आपका, रहे हमेशा साथ।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा- पुष्पांजलि करते विशद, चरण कमल में आज।
तव चरणों में आए हम, पाने शिवपद राज।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नोट : कर्म दहन के आठ अर्घ्य अग्नि में धूपदाने में धूप क्षेपण करते हुए मंत्रोच्चार पूर्वक चढ़ाएं।

ज्ञानावरण कर्म (दोहा)

ज्ञानावरणादिक सभी, मति श्रुत अवधिज्ञान।
मनः पर्यय केवल्य को, ढके आवरण जान।।
पंचावरण विनाश कर, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम ज्ञानावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनावरण कर्म

चक्षु अचक्षु अवधि तथा, केवल दर्शन चार।
कर्म दर्शनावरण है, निद्रा पंच प्रकार।।

कर्म दर्शनावरण नश, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।2।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम दर्शनावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय कर्म

भेद मोहनीय कर्म के, बतलाए अठबीस।
दर्शन मोह के तीन हैं, चारित के पच्चीस।।
सोलह भेद कषाय के, नो कषाय सब नाश।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिविध दर्शन मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सोलह विधि चारित्र मोहनीय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नव प्रकार अकषाय मोहनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम मोहनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्म

दान लाभ भोगोपभोग, और वीर्य पहिचान।
भेद कहे अन्तराय के, करें गुणों की हान।।
अन्तराय को नाशकर, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।4।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अन्तराय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्म (शम्भू छन्द)

साता असाता कर्म अघाती, वेदनीय के हैं दो भेद।
होय कभी उत्साह जीव को, कभी प्राप्त होता है खेद।।
वेदनीय के नशते अव्यावाध, सुगुण का होय प्रकाश।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।5।।

ॐ ह्रीं साता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम वेदनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म

आयुकर्म के भेद चार हैं, नरक-पशु-नर-देव विशेष।
रोके निश्चित काल जीव को, निज आयू पर्यन्त अशेष।।
आयु कर्म का नाश किए जिन, अवगाहन गुण में हो वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।6।।

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं तिर्यंच आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री नरक आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं देव आयु कर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम आयु कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म

रही प्रकृतियाँ नाम कर्म की, जैन धर्म आगम अनुसार।
पिण्ड रूप अठ्टाइस हैं चौदह, अपिण्ड प्रकृति के रहे प्रकार।।
नाम कर्म का नाश किए फिर, गुण सूक्ष्मत्व में होवे वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।7।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म अष्टविंशति अपिण्ड प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नाम कर्म नामा चतुर्दश पिण्ड प्रकृति मध्य पंचषष्ठी प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम नाम कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म

उच्च-नीच दो गोत्र कर्म के, भेद बताए हैं तीर्थेश।
इनका नाश करे जो प्राणी, अगुरुलघु गुण पाए विशेष।।
शिवपथ का राही बन जाए, नही रहे कर्मों का दास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।8।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम गोत्र कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय है कर्म विशेष।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, कर्म नाश्ते सिद्ध अशेष।।
अष्ट कर्म के नशते प्राणी, करते है शिवपुर में वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।9।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अघातिकर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अष्ट कर्म दहनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः।

जयमाला

दोहा- कर्म दहन पूजा करें, करने कर्म विनाश।
जयमाला गाते विशद, हो शिवपुर में वास।।

(शम्भू छन्द)

गुण गाने को सिद्ध प्रभू के, अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन।।
काल अनादी में कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।
चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है।।1।।
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।
त्रिंशत कोड़ा-कोड़ा सागर, स्थिति भाई पहिचानो।।
नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान।।2।।
वेदनीय बारह मुहूर्त्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।
अन्तर्मुहूर्त्त शेष कर्मों की, स्थिति का आता है पाठ।।

मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण।।3।।
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान।।4।।
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया।।
इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार।।5।।
आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास।।
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद।।6।।
अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभू विराजे, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध।।
भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ!।
'विशद' भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ।।7।।

(छन्दः घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय-जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु-लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।
अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विशद प्रायश्चित पाठ तर्ज - दिन रात मेरे.....

अन्जान जानकर के, अपराध जो किए हैं।
करके प्रमाद जीवों, का ध्यान न दिए हैं।।1।।
समरम्भ समारम्भ, आरम्भ से जो सारे।
त्रय योग से हुए जो, वे दोष सब हमारे।।2।।
कृत कारितानुमत से, चारों कषाएँ करके।
मिथ्याचरण किए हैं, कुत्सित जो भेष धरके।।3।।
आसन शयन गमन में, कोई जीव जो सताए।
आसक्त इन्द्रियों में, होके अभक्ष्य खाये।।4।।
क्षण-क्षण में हमसे भारी, अपराध हो रहे हैं।
दुष्कर्म करके पापों, का बोझ ढो रहे हैं।।5।।
श्री देव शास्त्र गुरु पद, प्रायश्चित विशद पाएँ।
आराधना प्रभू की, कर मोक्ष शीघ्र जाएँ।।6।।